P-ISSN: 2394-1685
E-ISSN: 2394-1693
Impact Factor (RJIF): 5.38
IJPESH 2023; 10(3): 71-75
© 2023 IJPESH
www.kheljournal.com
Received: 16-03-2023
Accepted: 30-03-2023

पुष्पेंद्र कुमार अहिरवार
स्कूल ऑफ फिजिकल एजुकेशन, डीएवीवी, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
पुष्पेंद्र कुमार अहिरवार
स्कूल ऑफ फिजिकल एजुकेशन, डीएवीवी, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा और खेल का प्रभाव

पुष्पेंद्र कुमार अहिरवार

DOI: https://doi.org/10.22271/kheljournal.2023.v10.i3b.2924

सारांश
शारीरिक शिक्षा एवं खेल युवाओं एवं महाविद्यालयीन छात्रों के भविष्य निर्माण में एक महत्वपूर्ण आयाम है। संस्थानिक स्तर पर मुहैया कराई गई सुविधाएं एवं अवसर युवाओं के लिए बेहतर कॅरियर निर्माण के दरवाजे खोलते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य है की 'मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में वर्तमान में शारीरिक शिक्षा एवं खेल' के माध्यम से क्या प्रभाव देखा जा रहा है। वर्तमान स्थिति जानने हेतु सर्वेक्षण के माध्यम से डाटा और सूचनाओं को सावधानीपूर्वक संकलित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया है। ऑनलाइन माध्यम से गूगल फॉर्म पर 12 प्रश्नों की प्रश्नावली 200 महाविद्यालय क्रीड़ा अधिकारियों को 15 मार्च 2023 को भेजी गई जिनमें से 44 ने अपने जवाब भेजे हैं और सही जानकारी मुहैया कराई है। उनकी सही जानकारी को इस अध्ययन के नमूने के रूप में माना गया है। एकत्रित किए गए डाटा के विश्लेषण और शिक्षा के उद्देश्य, उनसे प्राप्त प्रतिक्रियाओं को सरल प्रतिशत में परिवर्तन किया गया है। प्रमुख निष्कर्षों से पता चलता है कि जिन महाविद्यालयों में अभी नियमित क्रीड़ा अधिकारी की नियुक्ति नहीं हुई है वहां राज्य शासन सुनिश्चित करें कि नियमित अथवा अस्थाई क्रीड़ा अधिकारी की नियुक्ति करें। समय पर महाविद्यालयों में खेल के मैदानों का निर्माण हो सके, शारीरिक शिक्षा एवं खेल से जुड़े हुए विभिन्न कार्यक्रम कॉलेज स्तर पर किए जाएं ताकि समय रहते हुए विद्यार्थियों को सही जानकारी और मौके मिल सके ताकि उनका भविष्य निर्माण सुनिश्चित हो।

कूटशब्द: शासकीय महाविद्यालयों, शारीरिक शिक्षा एवं खेल युवाओं

प्रस्तावना
शारीरिक शिक्षा एवं खेल को भारत के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महत्वपूर्ण समझा गया है। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के 'स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस का आधार पत्र' (2009) के अनुसार शारीरिक शिक्षा स्कूल स्तर पर ही दी जानी चाहिए। भारत के अलावा ऐसा अमेरिका और रूस एवं अन्य विकसित देशों में शुरुआत से ही किया जाता है। आधुनिक शिक्षा के माध्यम से सुनिश्चित करते हैं कि शारीरिक शिक्षा और खेल युवा मस्तिष्क को शिक्षण क्षेत्र में लगनशील केंद्रीय एवं संतुलित बनाने में बहुत महत्वपूर्ण कदम निभाते हैं। खेलों के माध्यम से युवा खुद को अनुशासित करना सीखते हैं।

भारत की विशाल डेमोग्राफिक डिविडेंड के स्वास्थ्य के लिए यह अति आवश्यक है कि महाविद्यालयों स्तर पर भी उन्हें शारीरिक शिक्षा एवं खेल की सुविधाएं और अवसर प्रदान किए जाएं, जिससे कि भारत अपने मानव संसाधन का सही इस्तेमाल कर पाएगा।

मध्यप्रदेश के महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा का प्रभाव एवं युवाओं में हो रहे परिवर्तन का अध्ययन उच्च शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश शासन के अंतर्गत शासकीय महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा को लेकर विगत वर्षों में सकारात्मक परिवर्तनकारी कदम उठा रहे हैं। पिछले वर्षों में उच्च शिक्षा विभाग के द्वारा प्रभावकारी बनाई गई नीति, एवं नई शिक्षा नीति 2020 के तहत मध्य प्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद की शिक्षा में अमूल परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। इसी संदर्भ में, इस अध्ययन के प्रमुख प्रश्न शासन की प्रमुख नीतियां क्या-क्या है, महाविद्यालयों की शारीरिक शिक्षा को लेकर क्या रणनीतियां हैं और विगत वर्षों में युवाओं में क्या परिवर्तन देखने को मिले हैं।

लेख में यह अध्ययन किया जा रहा है कि नई शिक्षा नीति 2020 के तहत शारीरिक शिक्षा विषय का अन्य वैकल्पिक विषय के रूप में चलन शुरू किया गया है। महाविद्यालयों की स्थिति का अध्ययन करते हुए ज्ञात होता है कि प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के लिए सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पाठ्यक्रम की शुरूआत की गई है। प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के लिए अलग-अलग कालखंडों का आवंटन हुआ है। कक्षाओं में विद्यार्थियों की उपस्थिति को निर्धारित करने के लिए सकारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं जैसे कि समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन महाविद्यालय स्तर पर ही आयोजित किया जा रहा है। महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों का आंतरिक मूल्यांकन, लिखित परीक्षा, प्रोजेक्ट, प्रेजेंटेशन के माध्यम से किया जाता है। विद्यार्थियों में शारीरिक शिक्षा विषय में जागरूकता, शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाने के लिए उन्हें अंत: महाविद्यालयीन, जिला, संभाग एवं राज्य स्तर प्रतियोगिताओं में सम्मिलित कर उनके जोश और शारीरिक शिक्षा को प्रभावी बनाया जा रहा है।

यह भी निर्धारित हो रहा है कि विद्यार्थियों में शारीरिक शिक्षा विषय में ग्रेजुएशन करने की रुचि जागृत हो ताकि वे भविष्य में अपना कॅरियर शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में बना सकें। लंबे अंतराल के बाद उच्च शिक्षा विभाग में स्पोर्ट्स ऑफिसर की भर्ती की गई है जिसके फलस्वरूप शारीरिक शिक्षा विषय पढ़ाने के लिए शिक्षक उपलब्ध हो पा रहे हैं। यह एक बहुत ही सकारात्मक कदम है। उच्च शिक्षा विभाग की वार्षिक खेल स्पर्धाओं में विद्यार्थियों की सूची उनकी भागीदारी एवं उनके अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं। ऐसा विगत दिनों आयोजित किए गए विभिन्न टूर्नामेंटों में देखने को मिला है। शारीरिक शिक्षा का प्रभाव मात्र खेल और संबंधित गतिविधियों में ही नहीं देखा जा रहा है बल्कि इसका एक सकारात्मक प्रभाव और पहलू यह भी नजर आ रहा है कि विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव देखें उन्हें प्रशिक्षण और कोचिंग के माध्यम से उनकी प्रतिभा को और निखारने का काम भी महाविद्यालयों में किया जा रहा है।

साथ ही साथ उनके अंदर विभिन्न तरीके के नैतिक मूल्यों को भी खेल भावना के तहत विकसित किया जा रहा है । जैसे कि उनमें व्यक्तिगत साफ सफाई का ध्यान रखना, खानपान में सुधार लाना, टीम भावना के साथ खेलना, नेतृत्व के गुण का विकास होना, उनमें सहनशीलता आना पारस्परिक सहयोग के साथ तनाव का प्रबंधन करना उनके अंदर स्वरुचि जाग रही है जिससे आपसी भाईचारा इत्यादि गुणों की वृद्धि हो रही है।

आज के समय में शारीरिक शिक्षा रोजगार के माध्यमों और विभिन्न तरीके के अवसरों की ओर लुभाने का काम कर रही है। महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा और खेल की शिक्षा से यह एक नया आयाम विद्यार्थियों को देखने को मिल रहा है। मध्यप्रदेश जैसे राज्य में महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा का पाठ्यक्रम लागू होने की वजह से क्षेत्र में खेल के आयोजनों के कार्यक्रमों में काफी वृद्धि देखने को मिल रही है जिससे कि युवा एक सकारात्मक दिशा में अपनी उर्जा का स्थानांतरण कर रहे हैं जो कि उनके भविष्य और क्षेत्र के भविष्य के लिए एक बहुत ही प्रभाव कारी कदम है। शारीरिक शिक्षा विषय के कारण खेलकूद के संसाधनों, खेलकूद का आधारभूत संरचना जैसे कि ओपन जिम सेंटर में काफी वृद्धि देखने को मिल रही है। शासकीय सुविधाओं के अलावा निजी क्षेत्र की सुविधाएं भी विकसित हो रही है यह सब देखने में भी आ रहा है कि निजी क्षेत्र के लोग भी काफी निवेश कर रहे हैं जैसे की कई सारी निजी अकादमियों का खुलना यह दर्शाता है कि क्षेत्र में युवाओं के अंदर शारीरिक शिक्षा और खेल शिक्षा के क्षेत्र में रुचि देखने को मिली है।

मध्य प्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में शारीरिक एवं खेल शिक्षा की स्थिति को जांचने के लिए संपूर्ण मध्यप्रदेश के कुल 529 कॉलेजों में क्रीड़ा अधिकारी का प्रबंध राज्य की तरफ से समय पर किया जाना चाहिए। वर्तमान परिस्थिति में 298 स्थाई क्रीड़ा अधिकारी व प्रशिक्षक नियुक्त हैं, 102 अस्थाई हैं, एवं 129 महाविद्यालयों में क्रीड़ा अधिकारी के पद खाली हैं। महाविद्यालयों में किसी भी शारीरिक शिक्षा एवं खेल के विकास में यह बहुत महत्वपूर्ण तथ्य होता है जो साबित करता है कि महाविद्यालय में सुचारू रूप से शारीरिक शिक्षा एवं खेल पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

इसी अध्ययन को और पुस्ट करने के लिए सर्वे के माध्यम से विभिन्न और जुड़े हुए आयामों का परीक्षण किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में शारीरिक शिक्षा एवं खेलों की वस्तुस्थिति

भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने स्कूलों एवं महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षण एवं खेल शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया।

नई शिक्षा नीति (2020) लागू होने से पहले शारीरिक शिक्षा एवं खेल को स्कूल एवं महाविद्यालय स्तर पर एक अतिरिक्त पाठ्यक्रम चर्चा, गतिविधि माना जाता था। और खेलकूद संबंधी गतिविधियां सप्ताह में एक या दो बार ही आयोजित होती थी, जो कि शैक्षणिक घंटों के अलावा के समय में आयोजित की जाती थी। अब शारीरिक शिक्षा एवं खेल को एक अनिवार्य पाठ्यक्रम के तौर पर शामिल करने पर जोर दिया गया है इस विषय को अनिवार्य विषय की मान्यता प्राप्त हुई है विद्यार्थी अपने रूचि के अनुसार शारीरिक शिक्षा एवं खेल विषय को मुख्य विषय के तौर पर शैक्षणिक विषय के समान ही चयनित कर सकते हैं। स्कूल स्तर पर विद्यालय और महाविद्यालय विद्यार्थियों हेतु संस्थान में उपलब्ध संसाधनों की स्थिति के अनुसार स्कूल एवं महाविद्यालय सुनिश्चित करेंगे कि विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु शारीरिक शिक्षा एवं खेल विषय की आवश्यक वस्तुएं एवं संसाधन उपलब्ध हो सकें। जिन स्कूल और महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल हेतु अनिवार्य संसाधन उपलब्ध नहीं है वहां पर विभिन्न तरीके से वित्तीय मदद लेकर खास तौर पर जो पूर्व छात्र हैं उनके सहयोग से सभी संसाधन जुटाने का प्रयास प्रशासन करेगा।

खेल स्कूलों या किसी अन्य संस्थान में एनईपी दुर्भाग्य से खेल की धारणा को समग्र रूप से बदलने के लिए बहुत कुछ नहीं करता है। एकमात्र सकारात्मक प्रभाव यह अभ्यास को अनिवार्य करता है। इस प्रकार, उम्मीद है, यह निकट भविष्य में स्कूल एवं महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल के अधिक व्यापक विचार का मार्ग भी प्रशस्त कर रहा है।

नई शिक्षा नीति में सुनिश्चित किया गया है कि शारीरिक शिक्षा एवं खेल हेतु पर्याप्त शैक्षणिक एवं प्रशिक्षक स्टाफ की नियुक्ति की जाए। शारीरिक एवं खेल शिक्षा बहुअनुशासनिक अवसरों के दरवाजे खोलती है जिससे कि युवाओं का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके।

प्रयोगात्मक शिक्षा को मद्देनजर रखते हुए शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का विषय के रूप में सम्मिलित किया जाना स्कूलों एवं महाविद्यालयों स्तर की शिक्षा में एक विशेष कदम है।

खेल-एकीकरण एक अन्य क्रॉस-करिकुलर शैक्षणिक दृष्टिकोण है जो युवाओं में कौशल विकसित करने के लिए भौतिक क्रियाओं का उपयोग करता है।

छात्रों को फिटनेस अपनाने में मदद करने के लिए कक्षा में खेल-कूद की शिक्षा आजीवन दृष्टिकोण के रूप में दी जाएगी और परिकल्पित फिटनेस के स्तर के साथ संबंधित जीवन कौशल प्राप्त करने के लिए फिट इंडिया मूवमेंट के तहत अलग-अलग अवसर प्रदान किए जाएंगे।

मध्यप्रदेश युवा नीति 2023 के प्रमुख आयाम

मध्यप्रदेश युवा नीति 2023 का उद्देश्य की मध्यप्रदेश के युवा खेलों के माध्यम से उनके व्यवसाय एवं व्यक्तिगत विकास को उत्कृष्टता के साथ प्राप्त कर सकें।

मध्यप्रदेश में खेलों से संबंधित अधोसंरचना एवं फिटनेस इकोसिस्टम का विकास हो, जिससे कि अकादमिक तथा व्यवसायिक ज्ञान संस्थान के स्तर पर प्राप्त हो सके। युवाओं में उनके शारीरिक फिटनेस, योग एवं बाह्य क्षेत्र की गतिविधियां करने की आदत विकसित हो, जिससे की वे किसी भी क्षेत्र में अपना शारीरिक स्वास्थ्य बल संतुलन बनाकर रख सकें।

मध्यप्रदेश के युवा खिलाड़ियों का समग्र विकास हो सके जो भी युवा प्रतिभाएं हैं उनकी खोज की जाए और उनको निकालने हेतु सुनियोजित योजना के तहत महाविद्यालयों में विभिन्न अवसर प्रदान किए जाएं।

उत्कृष्ट खिलाड़ियों हेतु शीर्ष स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त हो एवं उन्हें निरंतर शासन की तरफ से आर्थिक सहायता मुहैया कराई जाए ताकि वे खेल और संबंधित क्षेत्र में अपनी आजीविका और कॅरियर को बना सकें।

पेरा खिलाड़ियों के लिए विशेष अवसर और सुविधाएं मुहैया कराई जाए ताकि वे समय-समय पर होने वाले राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग ले सकें इसके लिए शासन सुनिश्चित करें कि उन्हें बेहतर प्रशिक्षण प्राप्त हो और प्रतिभागियों का शासन स्तर पर ध्यान रखा जाए। प्रशासनिक स्तर पर भी युवा और खिलाड़ियों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाए।

मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में 'शारीरिक शिक्षा एवं खेल' का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

महाविद्यालयों में खेल के प्रांगण का होना साबित करता है कि अति महत्वपूर्ण खेल संबंधित अधोसंरचना महाविद्यालय के पास है। सर्वे में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 81% महाविद्यालयों में खेल के मैदान की जगह उपलब्ध है जिनमें से 60% महाविद्यालयों में खेल के मैदानों में खेलों का आयोजन किया जाता है। 19% महाविद्यालयों के पास व्यवस्थित रूप से खेल के प्रांगण नहीं है।

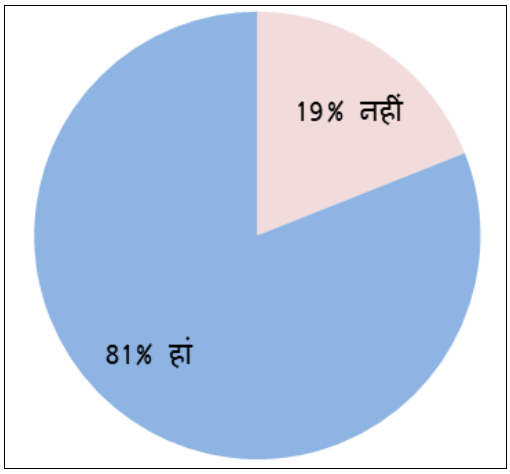

महाविद्यालयों में खेल के मैदानों की संख्या

क्या महाविद्यालय में अंत: कॉलेज/संस्थानिक खेल आयोजनों का कार्यक्रम होता है?

शासकीय महाविद्यालयों में उच्च शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार अंत: महाविद्यालय/संस्थानिक खेलों का आयोजन समय-समय पर किया जाना चाहिए और शासन को रिपोर्ट भेजी जानी चाहिए। जिन महाविद्यालयों में नियमित क्रीड़ा अधिकारी नियुक्त हैं ऐसे शत प्रतिशत महाविद्यालय में खेलकूद के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। अन्य महाविद्यालयों में जहां स्थाई क्रीडा अधिकारी की नियुक्ति नहीं है वहां पर भी लगभग 90% महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को प्रतियोगिताओं में सम्मिलित करवाया जाता है। कुल मिलाकर 95.20% महाविद्यालय में नियमित तौर पर अंत:कालेज/संस्थानिक स्तर पर खेलों के आयोजनों को सर्वेक्षण के परिणामों में देखा गया।

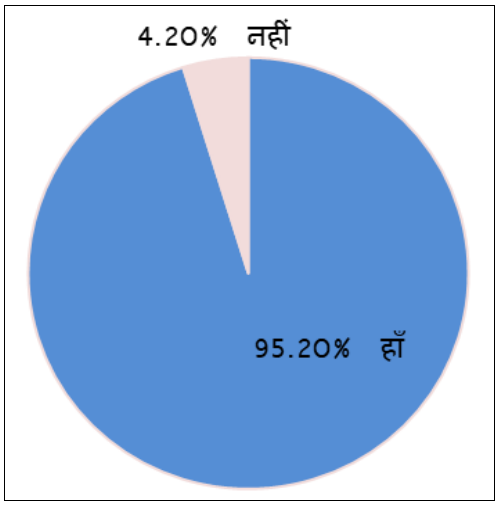

नियमित अंत: कॉलेज- संस्थानिक स्तर पर खेल आयोजनों की स्थिति

क्या महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा एवं खेल हेतु सेमिनार, संगोष्ठी, प्रतियोगिताएं एवं टूर्नामेंट आयोजित होते हैं?

शारीरिक शिक्षा एवं खेल के पाठ्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए क्रीडा अधिकारियों की सक्रियता एवं महाविद्यालय के अन्य स्टाफ की खेलों के प्रति रुचि एवं महाविद्यालय का सकारात्मक माहौल बनाए रखने के लिए नियमित तौर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेल हेतु सेमिनार संगोष्ठी विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं टूर्नामेंटों का आयोजन दर्शाता है कि नई शिक्षा नीति 2020 और मध्य प्रदेश युवा नीति 2023 के उद्देश्य प्राप्ति हेतु संस्था के स्तर पर सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। सर्वेक्षण के आंकड़ों से प्राप्त हुआ है कि लगभग 90.5% महाविद्यालयों में समय-समय पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलों से संबंधित सेमिनार संगोष्ठी प्रतियोगिता एवं टूर्नामेंटों का आयोजन किया जाता है। प्रोत्साहन के लिए विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र, ट्रॉफी, मैडल एवं विभिन्न परितोषक प्रदान किए जाते हैं। क्षेत्रीय प्रतिनिधियों के सहयोग से युवाओं को प्रोत्साहित किया जाता है एवं खेल के संबंधित अधोसंरचना की भी स्थिति पर नजर रखी जाती है। लगभग 9.5% महाविद्यालय ऐसे हैं जहां पर किन्ही कारणों से सेमिनार, संगोष्ठी और प्रतियोगिताओं का आयोजन नहीं किया जाता है। महाविद्यालय में क्रीड़ा अधिकारी की नियुक्ति ना होना, खेल के प्रांगण का ना होना, और विगत वर्षों में आई आपदा की वजह से कुछ बाधाएं रही हैं।

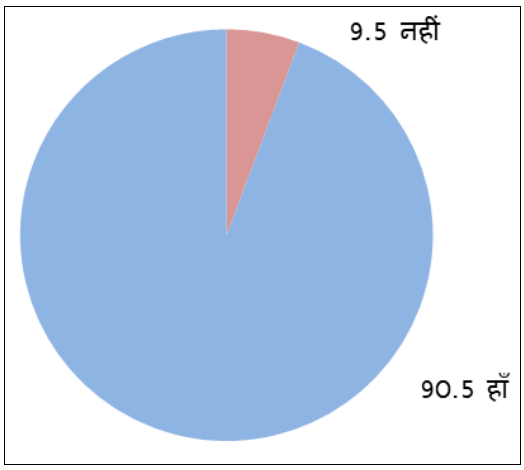

महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल हेतु सेमिनार, संगोष्ठी, प्रतियोगिताएं एवं टूर्नामेंट आयोजन की स्थिति

महाविद्यालय में खेलों में रुचि बढ़ाने हेतु कौन-कौन सी सुविधाएं उपलब्ध है?

सर्वेक्षण के माध्यम से यह जानने की कोशिश की गई है कि महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की खेलों में रुचि बढ़ाने हेतु कौन-कौन सी सुविधाएं उपलब्ध हैं। प्राप्त जानकारी में देखा गया कि अधिकतर महाविद्यालयों में इंडोर खेलों के साधन जैसे कि टेबल टेनिस, कैरम बोर्ड, बैडमिंटन, चैस एवं योगा केंद्र लगभग आधे महाविद्यालयों में उपलब्ध हैं।

आउट डोर खेलों में मुख्य तौर पर वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, फुटबॉल, सॉफ्टबॉल, कबड्डी, खो-खो के मैदान 60% महाविद्यालयों में है। 10% महाविद्यालयों में टग ऑफ वार और जूडो मेट उपलब्ध है।

जिन महाविद्यालयों में स्थाई क्रीड़ा अधिकारी की नियुक्ति है उन 80% महाविद्यालयों में जिम (खुला जिम सहित) की सुविधा भी उपलब्ध है। 10% महाविद्यालयों में वेटलिफ्टिंग की ट्रेनिंग मुहैया करवाई जाती है।

नियमित तौर पर विद्यार्थियों की महाविद्यालय में उपलब्ध खेलों की सुविधाओं के उपयोग हेतु रूचि बनाए रखने के लिए 60% महाविद्यालयों में समय-समय पर विभिन्न तरीके के परितोषक और खेल गौरव अवार्ड/ पुरस्कार दिए जाते हैं ।

निष्कर्ष

मध्यप्रदेश के युवा अपने समग्र विकास कर सकें इसके लिए संस्थानों के स्तर पर सुनिश्चित किया जाए कि उन्हें शारीरिक शिक्षा एवं खेल से संबंधित सभी अधो संरचनात्मक और बेहतर प्रशिक्षण प्राप्त हो इसके लिए महाविद्यालयीन संरचना महत्वपूर्ण पहलू है। नई शिक्षा नीति 2020 और मध्य प्रदेश युवा नीति 2023 के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु राज्य शासन, विभिन्न अनुदान प्रदाय कराने वाले संस्थान, क्षेत्रीय प्रतिनिधि, समाज के लोग, पूर्व छात्र एवं युवाओं को आगे आकर शारीरिक शिक्षा और खेलो में अपना योगदान देना पड़ेगा जिससे कि युवाओं का व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन होगा। जमीनी स्तर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेल गतिविधियां सुचारू रूप से जारी रहे इसके लिए महाविद्यालय प्रशासन और उच्च शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश शासन अपनी जिम्मेदारियों को समय पूर्वक निर्वहन करके ही सुनिश्चित कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. Singh GK. Survey of Sports personnel in Colleges of Madhya Pradesh, Indian Journal of Physical Education, Sports Medicine & Exercise Science. 2018;18(1):146-149.
2. GoI. New Education Policy- 2020, Ministry of Education, Government of India; c2020. [Online Web], URL: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf
3. मध्य प्रदेश युवा नीति (2023), मध्यप्रदेश शासन, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत ।
4. राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के 'स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस का आधार पत्र' (2009)।
5. उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन, https://highereducation.mp.gov.in/